(1)

7/8/20

B. A. Part I — डॉ० अनन्या कुमारी
Hindi Hons — असिस्टेंट प्रोफेसर
I Paper — हिंदी विभाग
मध्यकालीन हिन्दी काव्य / एस०एस०एल० कॉलेज
जहानाबाद

सूर के पद की व्याख्या —

प्रश्न — सूरदास के प्रस्तुत पद की व्याख्या करें —

जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ-सोइ कछु गावै॥
मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै॥
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावैं।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि करि सैन बतावै॥
इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावैं।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नँद-भामिनि पावै॥

उत्तर — व्याख्या — सप्रसंग —

प्रस्तुत पद महाकवि सूरदास द्वारा रचित है। प्रस्तुत पद महाकवि सूरदास के सूरसागर में वर्णित है। वहीं से यह पद हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित किया गया है।

प्रसंग — प्रस्तुत पद का प्रसंग है कि यशोदा श्रीकृष्ण को पालने में झुला रही है। इस आलोक में इसमें बाल प्रकृति का वर्णन किया गया है।

सरल भाव — प्रस्तुत पद में मातृ हृदय के आलोक में वात्सल्य प्रेम का वर्णन किया गया है तथा इसके साथ ही साथ बालकों का व्यवहार तथा उनकी प्रकृति का भी वर्णन है।

क्रमशः —

at your employees exactly as you want them to treat your best customers.

B.A. I Part (2) 7/8/20

Hindi Hons

सूर के पद की व्याख्या — क्रमशः —

व्याख्या आगे —

मातृ हृदय के आलोक में इस माता की तरह यशोदा कृष्ण को पालने में झुला रही है। वह उन्हें हिलाती है, दुलारती है तथा प्रेम से पुचकार करते हुए पुचकारती है। कृष्ण को पालने में झुलाने के क्रम में यशोदा के मन में जो भी बातें आती हैं उन्हें वह गाती है। यशोदा कृष्ण को सुलाने के लिए नींद को बुलाती हुई कहती है कि — हे नींद! तुझे कृष्ण बुला रहा है। तू जल्दी से आ जा और मेरे कृष्ण को सुला जा। तू जल्दी से आकर कृष्ण को क्यों नहीं सुला जाती।

कृष्ण कभी आँखों को मूँद लेते हैं और कभी अपने ओंठ को हिलाने लगते हैं। यह जानकर कि कृष्ण सो गए हैं, यशोदा चुप होकर रहती है तथा दूसरों को भी संकेत से चुप रहने को कहती है। संयोग से बालसुलभ प्रकृति के अनुसार कृष्ण थोड़े-थोड़े चौंककर जाग जाते हैं तथा यशोदा माता उन्हें मीठी लोरी गाकर सुलाने का प्रयास करती है। इस माता की तरह यशोदा अपने लाल को मीठी लोरी गाकर पुनः सुलाती है। वह सोचती है कि मेरे कृष्ण की नींद अभी पूरी नहीं हुई है।

अंतिम पंक्ति में सूरदास कहते हैं कि जो सुख देवताओं और मुनियों को दुर्लभ है, उसे नंद की पत्नी यशोदा सहज में ही प्राप्त कर रही है।

क्रमशः —